डा. मिर्जा महबूब बेग (अनंतनाग): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री ई. अहमद): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री मोहम्मद ई.टी. बशीर (पोन्नानी): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री असादूद्दीन ओवेसी (हैदराबाद): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री थोल तिरूमावलावन (चिदम्बरम): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय: श्री रामसुन्दर दास - उपस्थित नहीं हैं।

[हिन्दी]

श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा पेश किया गया एवं श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा समर्थित प्रस्ताव विचार के लिए सभा के समक्ष है। मैं इस प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

[अनुवाद]

प्रश्न यह है:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है और श्रीमती मीरा कुमार को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। उन्हें अध्यक्ष का आसन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

(प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, सभा के नेता श्री प्रणब मुखर्जी और विपक्ष के नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी श्रीमती मीरा कुमार को अध्यक्ष के आसन तक ले गए)

पूर्वाह्न 11.16 बजे

[**अध्यक्ष महोदय (श्रीमती मीरा कुमार)** पीठासीन हुईं]

पूर्वाह्न 1.16¼ बजे

अध्यक्ष महोदया को बधाइयां

[अनुवाद]

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह): अध्यक्ष महोदया, मैं इस सम्माननीय अध्यक्ष पद पर आपके सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर सरकार और अपने देशवासियों की ओर से आपका स्वागत करते हुए अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

महोदया, कई तरह से यह एक ऐतिहासिक अवसर है। पहली बार इस सम्माननीय सभा की एक महिला सदस्य और वह भी दलित समुदाय की महिला, अध्यक्ष निर्वाचित हुई हैं। महोदया, इस सम्माननीय पद पर आपको निर्वाचित करते हुए हम संसद सदस्य अपने देश की महिलाओं द्वारा की गई विभिन्न महान सेवाओं तथा देश के लिए दिये गये उनके महान योगदान के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं।

महोदया, इस अवसर पर, मुझे उन दिनों की याद ताजा हो जाती है जब आपके यशस्वी पिता, बाबू जगजीवन राम भारत सरकार में एक वरिष्ठ मंत्री थे। मुझे कई बार उनसे बातचीत करने का अवसर मिला तथा उनका विवेक, ज्ञान तथा अनुभव सरकार के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। आप विवेक और ज्ञान की मूर्ति स्वर्गीय बाबूजी की प्रतिमूर्ति हैं।

आपने देश की अनेकानेक रूप में सेवा कर अपना विशिष्ट योगदान दिया है। आप एक प्रतिष्ठित राजनयिक रही हैं। आप 25 से अधिक वर्षों से सांसद रही हैं। आप भारत सरकार में मंत्री रही हैं और मुझे विश्वास है कि आपका ज्ञान, विवेक और अनुभव इस सम्माननीय सभा के समक्ष आने वाले मुद्दों को निपटाने में अत्यंत उपयोगी साबित होंगे।

महोदया, इसके अलावा आप अपने मधुर, गरिमामय और कौशल भरे व्यक्तित्व के बल पर इस सभा में अक्सर

[डा. मनमोहन सिंह]

उत्पन्न होने वाली रोषपूर्ण स्थिति से बेहतर ढंग से निपट सकेंगी।

इन शब्दों के साथ मैं आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर आपको बधाई देता हूं। मैं आपके दुर्वह दायित्वों के निर्वहन में सरकार की ओर से अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

मैं, आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर पुनः आपका अभिवादन करता हूं और बधाई देता हूं।

वित्त मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी): अध्यक्ष महोदया, सभा के नेता के रूप में तथा सभा की ओर से, मैं आपके सर्वसम्मति से चुने जाने पर आपको बधाई देता हूं। प्रधान मंत्री ने एक राजनयिक, एक राजनीतिक संगठनकर्ता और सरकार में एक प्रशासक के रूप में आपके अनुभव के बारे में जानकारी दी, मैं उससे सहमत हूं। संसद में, विशेषकर इस सभा में आपका दीर्घ कार्यकाल का अनुभव आपको अपनी उन जिम्मेदारियों को निभाने में मदद करेगा जो इस समय आपको सौंपी गई हैं। अध्यक्ष महोदया, मैं जानता हूं कि यह कोई आसान काम नहीं है और इसलिए हम सभी मिलकर सभा को सुचारू और सही ढंग से चलाने में आपकी मदद करेंगे। यदा-कदा सभी सदस्य एक साथ मिलकर तो नहीं, लेकिन कुछ सदस्य आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। ऐसे में हमारा प्रयास होगा कि हम आपकी सहायता करें। जैसा कि प्रधानमंत्री ने सरकार की ओर से और हमारी पार्टी की ओर से आपको आश्वासन दिया है, मैं आपको बताना चाहूंगा और संभवतः सभा भी मेरा समर्थन करेगी कि पंद्रहवी लोकसभा, में हम कोई व्यवधान न पैदा करने और सिर्फ वाद-विवाद और चर्चा करने का एक नया उदाहरण प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे। निःसंदेह, प्रजातंत्र में भिन्न-भिन्न विचार हो सकते हैं, लेकिन हर बिंदु पर चर्चा होनी चाहिए, हर दृष्टिकोण से वाद-विवाद होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से हम इस संस्था के प्रति महान योगादन दे सकते हैं। यह वास्तव में लोकतंत्र का मंदिर है।

कुछ ही समय पूर्व हमने लोकतंत्र का बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया। 70 करोड़ से ज्यादा लोगों ने 543 प्रतिनिधियों को चुनने के लिए अपने मताधिकार का उपयोग किया। हम इस पावन अवसर पर यहां एकत्र हुए हैं। मैं आपको बधाई देना चाहता हूं। यद्यपि महान व्यक्तित्व वाले आपके पिता जी के साथ लम्बे समय तक काम करने का मुझे अवसर नहीं मिला था, लेकिन सत्तर के दशक के शुरू में एक कनिष्ठ मंत्री के रूप में मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला था। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि जो विरासत आपको मिली है और वर्षों में जो कुशाग्रता आपने हासिल की है उससे इन जिम्मेदारियों के निर्वहन में आपको मदद मिलेगी जैसा कि श्री बल्लभभाई पटेल और श्री जी.वी. मावलंकर से लेकर आपके तत्कालीन पूर्ववर्ती श्री सोमनाथ चटर्जी जैसे महान व्यक्तियों ने इस पद को सुशोभित करते हुए किया था। उन्होंने निष्पक्षता, विवेकशीलता और सही समय पर सही निर्णय लेने का अद्वितीय रिकार्ड कायम किया है। धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधी नगर): माननीय अध्यक्ष महोदया, 15वीं लोक सभा का प्रथम महत्वपूर्ण कार्य अभी-अभी सम्पन्न हुआ है। मैं स्वीकार करूंगा कि जब 22 मई को मंत्रिमंडल का गठन हुआ था, तब ऐसा नहीं लगता था कि इस प्रकार आज का अवसर आएगा। क्योंकि उस समय आप मंत्रिमंडल के उन 19 सदस्यों में से एक थीं, जिन्हें शासन का दायित्व सौंपा गया था। शायद इसी कारण कल या आज मैंने एक समाचार यह भी देखा कि आपके अपने क्षेत्र के लोग जरा चकित हो गए कि यह कैसे हुआ। उन्होंने आपके मंत्री होने की कल्पना की थी और वे समझते थे कि आप हमारे क्षेत्र की सेवा करेंगी और अब वह दूसरा दायित्व संभाल रही हैं। लेकिन मैं मानता हूं कि आप मंत्री रहकर जितनी सेवा अपने क्षेत्र की कर सकती थीं, उससे कहीं-कहीं अधिक इस नए पद पर बैठकर आप कर सकेंगी। इसीलिए अगर वहां के आपके मतदाताओं को, क्षेत्र के निवासियों को कुछ निराशा हुई है, तो वह इस कारण हुई है कि वे सम्भवतः आपके इस नए गरिमामय दायित्व को पहचान नहीं पाए, अन्यथा तो इस पद पर बैठकर कोई व्यक्ति सरकार के किसी भी व्यक्ति या शासन के किसी भी अधिकारी को अपने क्षेत्र के बारे में एक पत्र भी लिख कर भेज देगा, तो वह काम निश्चित रूप से हो जाएगा, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

मैं आज के इस अवसर पर स्मरण करता हूं कि आपके पूज्य पिता जी के साथ मुझे भी एक ही मंत्रिमंडल में कार्य करने का अवसर मिला है। उस समय हम लोग मोरारजी भाई देसाई के प्रधानमंत्रित्व में कार्यरत मंत्रिमंडल